मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० (H) पार्ट-III
पेपर - IV
प्रकरण - मैथिली साहित्यक आधुनिककाल

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 23.07.20

1801 ई० मे सबसँ पहिले कोल ब्रुक मैथिली शब्दक व्यवहारमे अनलनि। डॉ० ग्रिमर्सन सेहो मैथिली शब्दकेँ स्थापित करबाक प्रयास कयलनि। डॉ० ग्रिमर्सन भाषाक प्रति अति संवेदनशील छलाह, ओ भारतीय भाषाक संग-संग मैथिलीकेँ सेहो सेवा कयलनि।

आधुनिक कालमे मैथिलीक गतिहीनता क प्रमुख कारण छल - हिन्दी आ उर्दू भाषामे संघर्ष, मिथिलाराज द्वारा हिन्दी भाषा केँ स्वीकृति, मिथिलामे सामंती प्रथा।

अंग्रेज आओर मुसलमानक नीक सम्बन्ध नहि छल। 1857 ई०क गदरक दोषी अंग्रेज मुसलमानकेँ मानैत छल। एहि कालमे हिन्दी आओर उर्दूक मध्य संघर्ष आरम्भ भेल। सैयद अहमद हिन्दीकेँ गमारू मूर्खक भाषा मानैत छलाह। हिन्दी एहि अवधिमे राष्ट्रीय भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्त करबाक अग्रीम पंक्तिमे छल। मिथिलाक विद्वान भावनात्मकताक कारणेँ हिन्दीकेँ समर्थन करैत छलाह। ओहीसमयमे हिन्दीक गद्य काशी छल आओर अधिकांश संस्कृतक विद्वान हिन्दीक

पश्चात छलाह। 1880 ई० मे जखन मिथिला राज कोर्ट आफ वार्ड्ससँ मुक्त भेल आओर महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह राजा भेलाह, तखन मिथिलामे मैथिलीक स्थानपर हिन्दी भाषाकेँ स्वीकार कऽ लेलनि। एहीसँ मैथिलीकेँ बहुत अहित भेल। मिथिलासँ लुप्त होमय लागल आओर पाछा एहि कारणे मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाओल जाय लागल।

शेष अगिला अंकमे